।। रत्न - रागिनी ।।

रत्नों के विषय में मनुष्य की जिज्ञासा सदा से रही हैं, पहले ये आभूषणों के रूप में लोग देखते थे और सुनते थे । कई रत्न बहुत अनमोल और दुर्लभ होते हैं , कोहेनूर हीरा ऐसे ही अनमोल और दुर्लभ रत्नो में से ऐक हैं । आजकल लोग इन रत्नो को ग्रहों के प्रभावो के प्रतिकों के रूप में जानते हैं , ज्योतिष के रूप में ये ज्ञान अब और सहज और सरल हो गया हैं और हम ईन्हे पहचानने लगे हैं । हालाकि इनमें विविधता और विभिन्नता बहुत हैं फिर भी लोग ईन्हे जानना चाहते हैं । नवग्रहों के नवरत्न तो हैं ही परन्तु इनके उपरत्न भी होते हैं, ये उपरत्न मूल रत्नों के साथ ही खानों से निकलते हैं ।

कई रत्न अथवा पत्थर Precious , Semi Precious and Synthetic होते हैं । Precious पत्थर मूल्यवान होते हैं और Semi Precious अल्प मूल्यवान होते हैं Synthetic पत्थर नकली होते हैं । साधारणयता ज्योतिषि एंव लोग ग्रहों के रत्न के रूप में कुछ रत्नो को जानते हैं जैसे सूर्य रत्न माणिक (Ruby) चन्द्र रत्न मोती (Pearl) मंगल रत्न मूंगा (Coral) बुध रत्न पन्ना (Emerald) गुरु रत्न पुखराज (Yellow Sapphire) शुक्र रत्न हीरा (Diamond) शनी रत्न नीलम (Blue Sapphire) राहु रत्न गोमेद (Zircon) और केतु रत्न लहसुनिया (Cat's Eye) इस तरह ये ग्रहों के मूल रत्न माने जाते हैं । इसके बाद उपरत्नों की श्रंखला आरंभ हो जाती हैं । जैसे लालड़ी , फिरोजा (Turquoise) रोमनी , जबरजदद (Peridot) ओपल (Opal) तुरमली (Tourmaline) नरम (Spinal Ruby) सुनहला (Citrine) कटैला (Amethyst) सितारा (Gold Stone) स्फटिक (Rock Crystal) गौदन्ती (Moon Stone) तामड़ा (Garnet) लुध्या, मरियम, मकनातीस (Load Stone) सिन्दुरिया, नीली, धुनैला (Smoky Quartz) बैरूज (Aquamarine) मरगज (Jade) पितौनिया (Blood Stone) बॉशी, दुर्वेनजफ, सुलेमानी (Onyx) आलेमानी, जजेमानी, सावोर, तुरसावा, अहवा, अबरी, लाजर्वत (Lapis Lazuli) कुदरत, चिती, संगसन (White Zade) लारू, मारवर, दाना फिरंग (Kidney Stone) कसौटी, दारचना, हकीक, हालन, सीजरी, मुवेनजफ, कहरूवा (Amber) झना, संगबसरी, दांतला, मकड़ा, गुदड़ी, संगीया, कामला, सिफरी, हरीद, हवास, सीगंली, ढेड़ी, गौरी, सीया, सीमाक, मूसा, पनघन, अमलिया, डूर, खारा, पारा जहर, सीरखड़ी (Gypsum) जहर मोहरा, रवात, सोहन मक्खी, हजरते उद, सुरमा, पारस । यह सूची जयपुर के जौहरियों की प्रसीध्द संस्था द्वारा प्रकाशित सूची से ली गई हैं । इसमें अनेक पत्थर रत्नों की सूची में नही आते हैं परन्तु इन सबको ८४ रत्नों और उपरत्नो की सूची में रखा गया है । इसमें पारस पत्थर जो लोहे को सोना बना देता हैं अब तक किसी ने नही देखा हैं, परन्तु शास्त्रों में इसका उल्लेख हैं ।

सूर्य, सिंह राशि का स्वामी माना जाता हैं, इसका रत्न माणिक हैं इसे पदमराग, रविरत्न, चुन्नी और याकूत भी कहते हैं । अगर आपको ज्योतिष की दृष्टि से माणिक की तलाश हैं तो इसे तीन कैरेट तक पहनना चाहिये इससे कम प्रभाव नही दिखा पायेगा , हालाकि ये माणिक की परिक्षा पर निर्भर करेगा । अल्युमिनियम ऑक्साईड और ऑक्सीजन माणिक्य के मूल खनीज तत्व हैं । काला, सफेद और शहद जैसे रंग वाला माणिक्य नही पहनना चाहिये। इस पर ऐसे निशान अथवा धब्बे भी हो तो नही पहनना चाहिये ।

रक्त रंग का दोषरहित माणिक सर्वाधिक उपयोगी माना जाता हैं । बर्मा का माणिक्य सबसे अच्छा होता हैं , अफ्रिका के माणिक्य भी अच्छे होते हैं, परन्तु झिलमिलाहट कम होती हैं, श्रीलंका के माणिक्य थोडे पीले और चितकबरे होते हैं । काबुल के माणिक्य अच्छे होते हैं परन्तु बर्मा के माणिक्य का मुकाबला नही कर सकते । टैगानिका के माणिक्य भी अफ्रिका जैसे ही होते हैं, दक्षिण भारत के माणिक्य कालापन लिये होते हैं इसलिये ज्योतिष की दृष्टि से उचित नही । अगर माणिक मिलना सभंव नही दिखे तब इसके उपरत्न आजमायें, जैसे स्पाईनल, विक्रांत, शोभामणि और लालड़ी माणिक के उपरत्न हैं । इसे अनामिका उगंली में पहनना चाहिये , असली माणिक तीन कैरेट का होना चाहिये और इसका उपरत्न पॉचं कैरेट का । इसे सोने में पहनना चाहिये, अगर ओवल आकार में मिले तो बहुत अच्छा होता हैं । अन्यथा चतुर कारीगर दोषयुक्त माणिक को रीकटींग के बाद चौकोर बना देते हैं और बाजार में बेच देते हैं इससे उसका दोष मिटता नही हैं । अगर ज्योतिष की दृष्टि से माणिक्य पहना जा रहा हैं तो बर्मा का निर्दोष माणिक्य कुछ कम रत्ती वाला भी चलेगा अन्यथा वजन दर्शाया जा चुका हैं परन्तु उपरत्न में पॉच रत्ती का पहनना आवश्यक हैं अर्थात चार कैरेट से अधिक । हरहाल मे माणिक्य का पारदर्शक होना आवश्यक हैं । इस बात का सदा ध्यान रखे कि रत्न में कोई भी निशान अथवा बिन्दु , खरोंच, जाला, मैलापन और चिराव नही होना चाहिये । कोई भी रत्न दोरंगा नही होना चाहिये, इसके अलावा उसमें विपरित रंग वाले निशान अथवा बिन्दु भी नही होने चाहिये । रत्नो का प्रभाव उसमें पाये जाने वाले १३ खनीज तत्वो से होता हैं, जैसे सिलिकॉन, अल्युमिनियम, लोहा, कार्बन, ऑक्सीजन, हाईड्रोजन, तांबा, कैल्सियम, मैग्निशियम, सोडियम, जरकोनियम, बेरिलियम और फास्फोरस । इन खनीजो में से अगर कोई भी खनीज कम ज्यादा हुआ तो रत्न के प्रभाव में उसी के अनुपात में घटबढ होती हैं, हानि नही होती परन्तु निशान, बिन्दु, खरोंच, जाला, मैलापन और चिराव तथा दो रंग वाला रत्न हानि कर सकता हैं । बहरहाल इसकी परिक्षा प्रयोगशाला में की जा सकती हैं ।

।। रत्न - रागिनी ।।

हमारे शास्त्रों में रत्नो के कुछ विशेष अर्थ हैं अथवा एसा कहें कि कुछ विशेष मायने हैं । एसा माना जाता हैं हैं कि रत्नों की उत्पती दधिची नामक ऋषि और बली दैत्य के शरीर से हुई हैं । आगे हम देखेगें कि ऋषि दधिची और बली दैत्य के किस अंग से कौनसा रत्न उत्पन्न हुआ । बहरहाल वाराह मिहिर कहते हैं कि ऋषि दधिची की दन्त पक्ति से मोती उत्पन्न हुऐ ।

ऋषि दधिची की दन्त पक्ति से मोती की उत्पती को दर्शाने का कारण शायद ये रहा होगा कि मोती की विशेषताओं को हम कम करके ना आंके और उसकी उपयोगिता को समझने का प्रयास करें । ऋषि दधिची का जीवन बहुआयामी रूप में जनसाधारण के लिये उपयोगी सिध्द हुआ था । एक समय तो एसा भी आया और इससे संबंधित कथा भी मिलती हैं कि ऋषि दधिची की हड्डीयों से किसी दैत्य को मारने का शस्त्र बनाया गया था ।

विश्व के प्रसिध्द विद्वान इस बात स्वीकार करते हैं कि वेद संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ हैं । ॠग्वेद की अनेक ऋचाओं में रत्न शब्द का प्रयोग किया गया हैं । इस ग्रन्थ की सबसे पहली ॠचा में अग्नि को धातत्म कहा गया हैं । यथा -- " अग्नि मीले पुरोहित यवस्य देव मुत्विज्म होतारं रत्नं धात्वम् " (ॠ --१ -- १ -- १) ।

अग्नि पुराण, गरूड़ पुराण, देवी भागवत तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों मे हीरा, पन्ना, नीलम, माणिक्य आदि विभिन्न रत्नों और महारत्नों के नाम, प्राप्ती स्थान, लक्षण गुण दोष, उनकी परख शुध्दता अशुध्दता आदि का विस्तृत वर्णन मिलता हैं । हमारे प्राचीन ग्रन्थों, लोग गाथाओं और शास्त्रों के आधार पर ये निश्चित रूप से कहा जा सकता हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति में बहुत प्राचीन समय से ही रत्नोंकी गुणवता और उनकी दैवीय शक्ति का पुर्ण ज्ञान था । उनका ये ज्ञान और विश्वास कोरा अंधविश्वास नही कहा जा सकता हैं क्योंकि ' शङ्धर संहिता' आयुर्वेद का एक मान्य ग्रन्थ हैं जिसमें दूसरे अध्याय के तेरहवें श्लोक में लिखा हैं । यथा -- द्रव्ये रसोवीर्य विपाकः शक्तिरेव च । सम्बंधेन क्रमादेताः पंचवस्था प्रकीर्तिता । अर्थात -- प्रत्येक वस्तु की पाँच अवस्थाऐं होती हैं और उनमे से चार अवस्थाऐं तो खाने पीने पर अपना रूप दिखाती हैं और उसकी शक्ति और प्रभाव का असर धारण करते ही दिखाई देता हैं ।

कर्क राशि का स्वामी चन्द्र हैं और ये अगर कुण्डली में निर्बल हो जायें तो ज्योतिषि मोती पहनने की सलाह देते हैं , मोती को मुक्ता , ईन्द्र रत्न और शक्तिज के नाम से भी पुकारते हैं । इसके पहनने से मानसिक परेशानियॉ और स्त्रियों में मासिक धर्म की गड़बड़ी दूर होती हैं , मनोरोग से संबंधित रोग इसके निर्बल होने से होते हैं । भारतीय शास्त्रो के अनुसार गज मुक्ता, सर्प मुक्ता, मीन मुक्ता, आकाश मुक्ता, मेघ मुक्ता और सीप मुक्ता नामक मोती अत्यंन्त दुर्लभ हैं जो अब नही मिलते । गजमुक्ता हाथी के सिर में से निकलने वाले मोती को कहते हैं , सर्प मुक्ता सर्प के सिर में से निकलने वाले मोती को कहते हैं , साधारण जुबान में इसे नागमणि भी कहते हैं । मीन मुक्ता मछली के सिर में से निकलने वाले मोती को कहते हैं , आकाश मुक्ता किन्ही विशेष नक्षत्र योग में अचानक ही पृथ्वी पर आकाश से गिरने वाले मोती को कहते हैं , मेघ मुक्ता स्वाति नक्षत्र में वर्षा रूतु में अथवा वर्षा के लिये एक विशेष बादलों में बन गये और मिले मोती को कहते हैं ।

हालाकि अब ये परिस्थितियॉ उत्पन्न नही होती हैं और ना ही पृथ्वी पर अब ऐसे स्थान हैं जॅहा प्रकृति अपना खजाना लुटा सके । इसलिये अब ये सिर्फ किताबों की बाते हैं अथवा कभी मिल जायें तो चमत्कार की बाते हैं । जनसाधारण को सीप मुक्ता के विषय में पता हैं जोकि सीप में से निकलते हैं, बहरहाल इसके मूल खनीज तत्व हैं कैल्सियम कार्बोनेट, इसके अन्दर अपारदर्शी परतें अथवा (Layers) होती हैं । अगर उच्च स्तर का मोती ना मिल सके तो इसके विकल्प आजमायें । चन्द्रकॉतं मणि, मून स्टोन, सफेद पुखराज, सफेद हकिक इसके उपरत्नों में शामिल है। । कोई भी निशान अथवा बिन्दु , खरोंच, जाला, मैलापन और चिराव नही होना चाहिये, दोरंगा नही होना चाहिये, इसके अलावा उसमें विपरित रंग वाले निशान अथवा बिन्दु नही होने चाहिये ध्यान रखे धब्बेदार, चोंचदार और लहरदार मोती नही पहनना चाहिये । अगर मूल और असली मोती मिल जाये तो ऐक कैरेट ही काफी होगा परन्तु अगर उपरत्न पहनते हैं तो फिर पॉच कैरेट तक पहनना चाहिये ।

१, फारस की खाडी अथवा बसरा का मोती आजकल श्रेष्ठ माना जाता हैं, परन्तु दुर्लभ हो गया हैं ।
२, श्रीलंका का मोती सहुलियत से मिल जाता हैं । इसे साउथ सी (South Sea) के नाम से भी जाना जाता हैं ।
३, बंगाल की खाडी का मोती हल्का गुलाबी होता जो पहनने के बाद सफेद हो जाता है। परन्तु ये जल्दी ही अशुध्द हो जाता है ।
४, ऑस्ट्रेलियाई मोती भी आजकल मशहूर हैं , जोकि चॉदी जैसे सफेद होते हैं, परन्तु भारत में इनका चलन कम है ।
५, वैनेजुएलाई मोती सर्वाधिक सहुलियत से भारतीय बाजारो में उपलब्ध है ।

अगलें अकं में जारी--------

।। रत्न - रागिनी ।।

कई रत्न अथवा पत्थर Precious , Semi Precious and Synthetic होते हैं । Precious पत्थर मूल्यवान होते हैं और Semi Precious अल्प मूल्यवान होते हैं Synthetic पत्थर नकली होते हैं । साधारणयता ज्योतिषि एंव लोग ग्रहों के रत्न के रूप में कुछ रत्नो को जानते हैं जैसे सूर्य रत्न माणिक (Ruby) चन्द्र रत्न मोती (Pearl) मंगल रत्न मूंगा (Coral) बुध रत्न पन्ना (Emerald) गुरु रत्न पुखराज (Yellow Sapphire) शुक्र रत्न हीरा (Diamond) शनी रत्न नीलम (Blue Sapphire) राहु रत्न गोमेद (Zircon) और केतु रत्न लहसुनिया (Cat's Eye) इस तरह ये ग्रहों के मूल रत्न माने जाते हैं । इसके बाद उपरत्नों की श्रंखला आरंभ हो जाती हैं । जैसे लालड़ी , फिरोजा (Turquoise) रोमनी , जबरजदद (Peridot) ओपल (Opal) तुरमली (Tourmaline) नरम (Spinal Ruby) सुनहला (Citrine) कटैला (Amethyst) सितारा (Gold Stone) स्फटिक (Rock Crystal) गौदन्ती (Moon Stone) तामड़ा (Garnet) लुध्या, मरियम, मकनातीस (Load Stone) सिन्दुरिया, नीली, धुनैला (Smoky Quartz) बैरूज (Aquamarine) मरगज (Jade) पितौनिया (Blood Stone) बॉशी, दुर्वेनजफ, सुलेमानी (Onyx) आलेमानी, जजेमानी, सावोर, तुरसावा, अहवा, अबरी, लाजर्वत (Lapis Lazuli) कुदरत, चिती, संगसन (White Zade) लारू, मारवर, दाना फिरंग (Kidney Stone) कसौटी, दारचना, हकीक, हालन, सीजरी, मुवेनजफ, कहरूवा (Amber) झना, संगबसरी, दांतला, मकड़ा, गुदड़ी, संगीया, कामला, सिफरी, हरीद, हवास, सीगंली, ढेड़ी, गौरी, सीया, सीमाक, मूसा, पनघन, अमलिया, डूर, खारा, पारा जहर, सीरखड़ी (Gypsum) जहर मोहरा, रवात, सोहन मक्खी, हजरते उद, सुरमा, पारस । यह सूची जयपुर के जौहरियों की प्रसीध्द संस्था द्वारा प्रकाशित सूची से ली गई हैं । इसमें अनेक पत्थर रत्नों की सूची में नही आते हैं परन्तु इन सबको ८४ रत्नों और उपरत्नो की सूची में रखा गया है । इसमें पारस पत्थर जो लोहे को सोना बना देता हैं अब तक किसी ने नही देखा हैं, परन्तु शास्त्रों में इसका उल्लेख हैं ।